सिलेबस – अगस्त माह

सप्तमः पाठः – नीतिश्लोकाः
(नीति से युक्त श्लोक)

1 यस्य कृत्यं .... पण्डितः उच्यते ।।

शब्दार्थ – यस्य - जिसका, कृत्यं - कार्य को, विघ्नन्ति - बाधा डालते हैं। शीतम् + उष्णम् - ठंडक तथा गर्मी को, भयं - डर, रतिः - आनन्द। समृद्धिः - खुशहाली, असमृद्धिः - फटेहाली। वा - अथवा, वै - वही व्यक्ति, पण्डितः - ज्ञानी (विद्वान), उच्यते - कहा जाता है।

हिन्दी अनुवाद - जिसके कार्य को ठंडापन, गर्मी, डर, आनन्द और खुशहाली और फटेहाली बाधा नहीं डालते, वही व्यक्ति ज्ञानी (विद्वान) कहा जाता है।

2. तत्त्वज्ञः .... पण्डितः उच्यते ।।

शब्दार्थ – तत्त्वज्ञः - गूढ़ रहस्य को जानने वाला, सर्वभूतानां - सभी प्राणियों के, योगज्ञः - कुशल संपादन को जानने वाला, सर्वकर्मणां - समस्त कर्मों का, उपायज्ञः - उपाय को जानने वाला, मनुष्याणां - मनुष्यों का, नरः - मनुष्य, पण्डितः – ज्ञानी (विद्वान), उच्यते - कहा जाता है।

हिन्दी अनुवाद – समस्त प्राणियों के जीवन के गूढ़ रहस्य को जानने वाला सभी कार्यों के कुशल सम्पादन को जानने वाला तथा मनुष्यों के सभी उपायों को जानने वाला मनुष्य विद्वान कहा जाता है।

3. अनाहूतः प्रविशति .... मूढ़चेता नराधमः ।।

शब्दार्थ – अनाहूतः - बिना बुलाये, प्रविशति - प्रवेश करता है। अपृष्टः – बिना पूछे, बहु भाषते - आवश्यकता से अधिक बोलता है। अविश्वस्ते - अविश्वसनीय व्यक्ति पर, विश्वसिति - विश्वास करता है। मूढ़चेता - मूर्ख स्वभाव वाला व्यक्ति, नराधमः - मनुष्यों में सबसे नीच व्यक्ति।

हिन्दी अनुवाद – जो व्यक्ति बिना बुलाये किसी के घर में प्रवेश करता है। बिना पूछे आवश्यकता से अधिक बोलता है। जो विश्वसनीय व्यक्ति नहीं है, उस पर आँख बन्द करके विश्वास करता है, वह मूर्ख, जिद्दी तथा सबसे नीच स्वभाव वाला व्यक्ति कहलाता है।

4. एको धर्मः .... सुखावहा ।।

शब्दार्थ - एकः - एकमात्र, धर्मः - धर्म (अच्छाई को धारण करना), परं - सबसे बड़ा, श्रेयः - कल्याण, क्षमा - सहनशीलता, शान्ति - शान्ति, उत्तमा - सबसे श्रेष्ठ, विद्यैका - एकमात्र विद्या ही। तृप्तिः - सन्तुष्टि, अहिंसा – हिंसा (अपराध) नहीं करना, सुखावहा - सुख प्रदान करने वाली।।

हिन्दी अनुवाद - एकमात्र धर्म ही सबसे अधिक कल्याण को प्रदान करने वाला होता है। एकमात्र सहनशीलता ही सबसे उत्तम शान्ति है। एकमात्र विद्या ही सर्वाधिक सन्तुष्टि प्रदान करने वाली होती है और एकमात्र अहिंसा ही सबको सर्वाधिक सुख प्रदान करने वाली है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

5. त्रिविधं .... त्रयं त्यजेत् ।।

शब्दार्थ - त्रिविधं - तीन प्रकार का, नरकस्य + इदं - यह नरक का। द्वारं - दरवाजा, नाशनम् - विनाश करने वाला, आत्मनः - अपने का। कामः - इच्छा, क्रोधः - गुस्सा, तथा - इस प्रकार, लोभः - लालच। तस्मात् - इसलिए, एतत् - यह, त्रयं - तीनों को, त्यजेत् - छोड़ देना चाहिए।

हिन्दी अनुवाद - इच्छा, गुस्सा तथा लालच ये तीनों नरक के तीन दरवाजे है। इसलिए अपने खुद को विनाश पथ पर ले जाने वाले इन तीनों का त्याग करना चाहिए।

6. षड् दोषाः .... आलस्यं दीर्घसूत्रता ।।

शब्दार्थ - षड् - छः प्रकार के, दोषाः - अवगुण, पुरुषेण + इह, यहाँ पुरुष (प्राणी) के द्वारा, हातव्या - छोड़ देना चाहिए, भूतिमिच्छता - ऐश्वर्य को चाहने वाले, निद्रा - नींद, तन्द्रा - अनुत्साह। भयं - डर, क्रोधं - गुस्सा, आलस्यं - आलस्य, दीर्घसूत्रता - काम को टालने की आदत।

हिन्दी अनुवाद - इस संसार में अपना कल्याण चाहने वाले व्यक्ति के द्वारा नींद, उत्साहहीनता, डर, गुस्सा, आलस्य तथा काम टालने की प्रवृति को अर्थात् दीर्घसूत्रता इन छः दोषों का त्याग कर देना चाहिए।

7. सत्येन रक्ष्यते .... वृतेन रक्ष्यते ।।

शब्दार्थ - सत्येन - सत्य के द्वारा, रक्ष्यते - रक्षा की जाती है। धर्मः - धर्म की, योगेन - अभ्यास क्रिया के द्वारा, मृजया - श्रृंगार प्रसाधन से, रूपं - स्वरूप को, कुलं - खानदान, वृतेन - व्यवहार (आचरण) से ।।

हिन्दी अनुवाद - सत्य के द्वारा धर्म की रक्षा की जाती है। अभ्यास क्रिया के द्वारा विद्या की रक्षा की जाती है। श्रृंगार प्रसाधन से स्वरूप की रक्षा की जाती है तथा आचरण या अच्छे व्यवहार से खानदान की रक्षा की जाती है।

8 सुलभाः पुरुषा .... श्रोता च दुर्लभः ।।

शब्दार्थ - सुलभाः - आसानी से प्राप्त, पुरुषाः - व्यक्ति, राजन् - हे राजन!, सततं - हमेशा, प्रियवादिनः - प्रिय बोलने वाले, अप्रियस्य - जो प्रिय (अच्छा) न हो उसका, तु - तो, पथ्यस्य - कल्याणकारी, वक्ता - बोलने वाला, श्रोता - सुनने वाला। च - और, दुर्लभः - कठिनाई से प्राप्त।

हिन्दी अनुवाद - हे राजन! हमेशा प्रिय वाणी बोलने वाले व्यक्ति आसानी से उपलब्ध होते हैं। लेकिन अप्रिय किन्तु कल्याणकारी वाणी बोलने वाले व्यक्ति बहुत कठिनाई से प्राप्त होते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(9) पूजनीय महाभागाः .... विशेषतः ॥

शब्दार्थ - पूजनीय - पूजने योग्य, महाभागाः - महान् भाग्य को प्रदान करने वाली, पुण्याः - पुण्य प्राप्त करने योग्य, च - और, गृहदीप्तयः - घर का प्रकाश (कान्ति), स्त्रियः - स्त्रियाँ, श्रियः - लक्ष्मी (शोभा), गृहस्थ - घर की, उक्ताः - कही गई हैं। तस्मात् - इस कारण से, रक्ष्या - रक्षा करने योग्य, विशेषतः - विशेष रूप से

हिन्दी अनुवाद - घर की शोभा बढ़ाने वाली, घर का प्रकाश, पुण्य को प्रदान करने योग्य तथा महान् भाग्य को प्रदान करने वाली स्त्रियाँ पूजनीय कही गयी हैं। इसलिए ये विशेष रूप से रक्षा करने योग्य होती हैं।

(10) अकीर्तिं विनयो .... हन्त्यलक्षणं ॥

शब्दार्थ - अकीर्तिम् - अपयश को, विनयः - विनम्रता (झुक जाना) हन्ति - नष्ट करता है। हन्ति + अनर्थं - अनर्थ (अपशकुन) को नाश करता है। पराक्रमः - पराक्रम (पराक्रमी व्यक्ति), नित्यं - हमेशा, क्षमा - सहनशीलता, क्रोधम् - गुस्सा को, आचारः - अच्छा आचरण तथा व्यवहार, अलक्षणम् - बुरे लक्षण को।

हिन्दी अनुवाद - विनय अपयश का नाश करता है। पराक्रम अनर्थ (अनिष्ट) को दूर करता है। सहनशीलता से हमेशा क्रोध का नाश होता है और सुन्दर व्यवहार से समस्त बुरे लक्षण समाप्त होते हैं।

व्याकरण

1 प्रकृति-प्रत्यय विभाग-व्युत्पत्ति: -

निवर्त्य - नि + वृत् + ल्यप्
उपगम्य - उप + गम् + ल्यप्
वक्तव्यम् - वच् + तव्यत्
परिहृत्य - परि + हृ + ल्यप्
साध्यः - साध् + ण्यत्
गृहीत्वा - ग्रह् + क्त्वा
जित्वा - जि + क्त्वा
मेतव्यम् - मी + तव्यत्
दातव्यम् - दा + तव्यत्
जनितम् - जन् + क्त
आचारः - आङ् + चर् + घञ्
लोभः - लुभ् + घञ्

अभ्यासः (मौखिकः)

1 एकपदेन उत्तरं वदत -

(क) धृतराष्ट्रस्य मंत्री (ग) क्षमा (ङ) त्रिविधम्
(ख) अविश्वस्ते (घ) विद्या (च) योगेन (छ) अकीर्ति

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2. श्लोकांशं योजयित्वा वदत –

उत्तर – (क) नाश्नन्मात्मनः लोभस्तस्मादेतत्
(ख) विद्यायोगेन रक्ष्यते, मृजया रक्ष्यते रूपं ।

आत्मज्ञः (लिखितः)

1. एकपदेन उत्तरं वदत –

(क) सर्वभूतानाम् (ख) मूढचेतानराधमः (ग) सत्येन
(घ) क्रोधम् (ङ) अहिंसा एका (च) आत्मनः
(छ) भूतिमिच्छता पुरुषेण

2. उदाहरणमनुसृत्य क्तिन् प्रत्यय योगेन शब्द निर्माणं करणीयम् –

उत्तरं – गम् + क्तिन् = गतिः
शम् + क्तिन् = शान्तिः
तृप् + क्तिन् = तृप्तिः
रम् + क्तिन् = रतिः
श्रु + क्तिन् = श्रुतिः
सम् + ऋध् + क्तिन् = समृद्धिः
वृध् + क्तिन् = वृद्धिः
नी + क्तिन् = नीतिः
हन् + क्तिन् = हन्तिः
कृ + क्तिन् = कृतिः

3. उदाहरणमनुसारं वाच्य-परिवर्तनं कुरुत –

उत्तर. (क) कर्मवाच्ये – पराक्रमेण अनर्थः हन्यते।
(ख) कर्तृवाच्ये – क्षमा क्रोधं हन्ति।
(ग) कर्मवाच्ये – योगेन विद्या रक्ष्यते।
(घ) कर्तृवाच्ये – मृजा रूपं रक्षति।
(ङ) कर्तृवाच्ये – आचारः अलक्षणं हन्ति।
(च) कर्तृवाच्ये – अहं ग्रन्थं पठामि।
(छ) कर्मवाच्ये – अस्माभिः वेदः पठ्यन्ते।

4. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत –

उत्तरं – (क) पुरुषेण निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधं आलस्यं दीर्घसूत्रता च इति नाम्ना षड्दोषाः हातव्या।
(ख) सर्वभूतानां तत्त्वज्ञः सर्वकर्मणाम् योगज्ञः मनुष्याणां उपायज्ञः नरः पण्डितः उच्यते।
(ग) एक एव धर्मः परं श्रेयः कथ्यते।
(घ) कामः क्रोधः तथा लोभः नरकस्य त्रीणि द्वाराणि च सन्ति।
(ङ) अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।
(च) स्त्रियः गृहस्य श्रियः उक्ताः सन्ति।
(छ) कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

5. निम्नाङ्कित पदैः स्वकं के वाक्यं रचयत –
उत्तर – (क) उच्यते – तेन सत्यम् उच्यते।
(ख) त्यजेत – छात्रः सुखं त्यजेत।
(ग) बहुभाषते – दुर्जनः सदा बहुभाषते।
(घ) विश्वसिति – बालकः पितरं प्रति विश्वसिति।
(ङ) वर्तते – तत्र अध्यापकः वर्तते।
(च) विघ्नन्ति – दुर्जनाः सदा कार्यं प्रति विघ्नन्ति।
(छ) रक्ष्या – जननी जन्मभूमिः सदा अस्माभिः रक्ष्या।

अष्टमः पाठः

कर्मवीर कथा – कर्मवीर की कहानी

शब्दार्थ – निज – अपना, उत्साहेन – उत्साह से, प्राप्य – प्राप्त करके, महत् – बड़ा, लभते – प्राप्त करता है। सर्वत्र – सभी जगह, मूलतः – मूलरूप से, सर्वं कर्तुं प्रभवेत् – सब कुछ कर सकता है। तत्र – वहाँ, अति – अत्यधिक। क्लिष्ट जीवनाः – कठिनाई से जीवन जीने वाले। बहिः – बाहर। न्यवसत् – रहता था। जीर्णप्राय वात् – लगभग जर्जर होने से आतपमात्रात् – केवल धूप से। रक्षति – रक्षा करता है। भार्या – पत्नी, कनीयसी – छोटी, दुहिता – बेटी, क्रोशमात्र – कोस मात्र, संस्थापितः – स्थापना की गई। सामाजिक सामरस्य रसिकः – सामाजिक समरसता का पक्षपाती, समागतः – आया, कदाचित् – कभी, खेलनरत – क्रीडा में निमग्न। विलोक्य – देखकर, आपातरमणीयेन – स्वाभाविक सौन्दर्य से, शिक्षितुम् + आरभत – शिक्षा शुरू हुई। शिक्षणशैल्या-कृष्ट – शिक्षणशैली से आकृष्ट, परमा – उत्तम, ख्यातिः – ख्याति, मन्यमानः – मानता हुआ, निरन्तर – लगातार, अध्यवसायेन – परिश्रम से, विद्यान् अधिगमाय – विद्या प्राप्त करने के लिए, निरतः – तल्लीन, अभवत् – हो गया। क्रमशः – धीरे-धीरे, प्राथम्यं – प्रथम स्थान, प्राप – प्राप्त किया, तपः – तपस्या, भूयोभूयः – बार-बार, उपदिष्टः – उपदेश प्राप्त, असौ – वह, पित्रो – माता-पिता के। अर्थाभावे + अपि – धन के अभाव में भी, छात्रवृत्या – छात्रवृत्ति से। कनीय – छोटा, लब्धेन धनेन – प्राप्त किये गए धन से, सततं – हमेशा, सावहितचेतसा – सावधान मन से, अकृतकालक्षेपः – बिना समय बर्बाद किया हुआ।

P.T.O

Officer.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

स्वाध्यायनिरतः अभूत् - अध्ययन में निमग्न हो गया। पुस्तकागारे - पुस्तकालय में, आत्मसात् कृतवान् - कण्ठस्थ कर लिया, अवाप्य - प्राप्त करके, ख्यातिम् + अवर्धयत - प्रसिद्धि को बढ़ाया, श्रूयते स्म - सुना जाता था। न + अजानताम् - नहीं जानते हुए भी, विद्या + जन्या - विद्या से प्राप्त, वर्ष + अन्तरे - वर्ष बीतने पर, स्वाध्यवसायेन - परिश्रम से, उन्नत - सर्वश्रेष्ठ, अवाप - प्राप्त किया। तादृशे = वैसे, परिवारपरिवेशे - पारिवारिक परिवेश में, पर - अत्यधिक, प्रीताः अभवन् - प्रसन्न हुए, अद्य - आज, प्रभूताः - बहुत अधिक, सामर्थ्यं - सामर्थ्य (क्षमता), सर्वेषाम् + आवर्जके - सब को आकर्षित करता है। नूनम् - निश्चय ही, व्यतीत्य - बिताकर, संजातः - हो गया, सत्यम् + उक्तम् - सच कहा गया है। उद्योगिनं - परिश्रमी, पुरुषसिंह - शेर के समान व्यक्ति, उपैति - प्राप्त होती है।

व्याकरण

1 समास विग्रहः -

कर्मवीरः - कर्मणि वीरः

निजोत्साहेन - निजः उत्साहः, तेन

बिहारराज्यस्य - बिहारः च असौ राज्यम्, तस्य

परिवारजनान् - परिवारस्य जनान्

नवीनदृष्टि सम्पन्नः - नवीना दृष्टिः यस्य सम्पन्नः

सामाजिकसामरस्यरसिकः - सामाजिके सामरस्ये रसिकः

अर्थाभावे - अर्थस्य अभावे

क्लिष्टजीवनाः - क्लिष्टं जीवनं येषां, ते

खेलनरतम् - खेलने रतम्

दलितबालकम् - दलितः च असौ बालकः तम्

आपातरमणीयेन - आपातेन रमणीयः तेन

विद्याधिगमाय - विद्यायाः अधिगमाय

शिक्षणलब्धेन - शिक्षणेन लब्धेन

सावहितचेतसा - सावहित चेतः तेन

अकृतकालक्षेपः - न कृतः कालस्य क्षेपः येन, सः

विश्वविद्यालयपरिसरे - विश्वविद्यालयस्य परिसरे

पुरुषसिंहम् - पुरुषः सिंहः इव, तम्

शिक्षाविहीना - शिक्षया विहीनाः

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2 प्रकृति - प्रत्यय विभाग - व्युत्पत्तिः

शब्द	उपसर्ग - धातु - प्रत्यय
निरतः	नि + रम् + क्त
अध्यापनम्	अधि + इङ् + णिच् + ल्युट्
लब्धम्	लभ् + क्त
ख्यातिम्	ख्यै + क्तिन्
कृतवान्	कृ + क्तवतु
उपदिष्टः	उप + दिश् + क्त
अभिभूतः	अभि + भू + क्त
आकृष्टः	आङ् + कृष् + क्त
ज्ञानेन	ज्ञा + ल्युट्
प्रीताः	प्री + क्त
सञ्जातः	सम् + जन् + क्त
व्यतीत्य	वि + अति + इण् + ल्यप्
कृतेन	कृ + क्त

अभ्यासः (मौखिकः)

1 एकपदेन उत्तरं वदत -

उत्तर - (क) रामप्रवेशः रामः

(ख) मीरवनटोला

(ग) दलितबालकम्

(घ) केन्द्रीयलोकसेवापरीक्षायाम्

(ङ) स्वाध्यवसायेन

अभ्यासः (लिखितः)

1 एकपदेन उत्तरं लिखत -

उत्तरम् (क) मीरवनटोला (ख) शिक्षकः

(ग) शिक्षकस्य (घ) स्वमहाविद्यालयस्य

(ङ) लक्ष्मीः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत -

उत्तर - (क) 'मीरवनटोला' इति ग्रामः बिहारराज्यस्य दुर्गमप्राये प्रान्ते अस्ति।

(ख) प्राथमिकविद्यालये नवीनदृष्टिसम्पन्नः सामाजिकसामरस्यरसिकः शिक्षकः समागतः।

(ग) शिक्षकः एकं दलितं बालकं शिक्षितुम् आरभत।

(घ) रामप्रवेशः केन्द्रीयलोकसेवापरीक्षायाम् उन्नतं स्थानम् अवाप।

(ङ) पित्रोः अर्थाभावेऽपि रामप्रवेशः महाविद्यालये प्रवेशम् अलभत।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(च) साक्षात्कारे समिति सदस्याः तस्य व्यापकेन ज्ञानेन तादृशे परिवार परिवेशे कृतेन श्रमेण अभ्यासेन च प्रीताः अभवन्।
(छ) रामप्रवेशस्य प्रतिष्ठा विश्वविद्यालये महाविद्यालये, स्वप्रान्ते, केन्द्रप्रशासेन नगरे ग्रामे च दृश्यते।
(ज) लक्ष्मीः उद्योगिनं जनम् उपैति।

3. उदाहरणम् अनुसृत्य रक्षति। त्रायते क्रियापदस्य प्रयोगं कृत्वा मञ्जूषातः चित्वा, तत्र समुचित विभक्तिं संयोज्य सप्त वाक्यानि रचयत -

उत्तर - (क) पद्मजा पापात् त्रायते।
(ख) देवदत्तः रोगात् रक्षति।
(ग) रमेशः स्वमित्रं दोषात् त्रायते।
(घ) करीमः स्वदेशं आतङ्कवादिनः रक्षति।
(ङ) रमेशः लुण्ठकात् त्रायते।
(च) दिनेशः स्वग्रामं लुण्ठकात् रक्षति।
(छ) वैद्यः रोगात् त्रायते।

4. निम्नाङ्कितानां समस्तपदानां विग्रहं कृत्वा समास-नामानि लिखत -

समास	विग्रह	समास का नाम
(क) अकृतकालक्षेपः	न कृतः कालस्य क्षेपः येन सः	बहुव्रीहि
(ख) पुस्तकागारम्	पुस्तकस्य आगारम्	षष्ठी तत्पुरुष
(ग) स्नातकपरीक्षायां	स्नातकस्य परीक्षायां	" "
(घ) दलितबालकं	दलितः च असौ बालकः तम्	कर्मधारय
(ङ) क्लिष्टजीवनाः	क्लिष्टं जीवनं येषां ते	बहुव्रीहि
(च) नवीनदृष्टिसम्पन्नः	नवीना दृष्टिः यया सम्पन्नः	तृ. तत्पुरुष
(छ) सामाजिकसामरस्यसम्पन्नः	सामाजिके सामरस्ये संपन्नः	स.त.
(ज) स्वाध्यायनिरतः	स्वाध्याये निरतः	सप्तमी तत्पुरुष

5 पठितपाठम् अनुसृत्य निम्नलिखित पदानां पर्यायरूपाणि लिखत -

उत्तर - (क) कठिनजीविताः - क्लिष्टजीविताः
(ख) अकृतसमयनाशः - अकृतकालक्षेपः
(ग) क्षमता - सामर्थ्यं
(घ) जनप्रियः - लोकप्रियः
(ङ) आकर्षकम् - आवर्जकम्
(च) संलग्नः - निरतः
(छ) परिश्रमः - अध्यवसायः
(ज) धनाभावः - अर्थाभावः
(झ) सावधानमनसा - सावहितचेतसा
(ञ) सद्यः आकर्षकेण - आपातरमणीयेन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सिलेबस - सितम्बर माह

नवमः पाठः - स्वामी दयानन्दः

शब्दार्थ :- उद्धारकः - उद्धार करने वाला, प्रभूतं - अत्यधिक, गृह्यते - ग्रहण किया जाता है। बोधः - ज्ञान, प्रथाः - प्रथाएँ, खण्डयित्वा - खण्डित करके, निरूपयति - निरूपण करता है। नाना - अनेक प्रकार के, अदूषयन् - दूषित किया गया, गर्हिता - दयनीय, तिरस्कृत्य - तिरस्कार करके, धर्मान्तरणं - धर्म परिवर्तन, स्वीकृतवन्तः - स्वीकार किये, एतादृशे - ऐसी, ऊनविंशशतके - उन्नीसवी शताब्दी में, केचन् - कुछ लोग, वैषम्य - विषमता, निवारकाः - निवारण करने वाले, सत्य + अन्वेषिणः - सत्य की खोज करने वाला, प्रादुरभवन् - उत्पन्न हुए, नूनं - अवश्य ही। व्यापकत्वात् - व्यापकता से, शिखर स्थानीयः - शीर्ष स्थाना कृतम् - किया गया, जातः - हुआ, तादृश्य + एव - वैसा ही। तदानीम् - उस समय, उद्बोधक जातम् - प्रेरणादायक हुआ, विग्रहम् + आरुह्य - मूर्ति पर चढ़कर, द्रव्याणि - वस्तुएँ, भक्षयन्ति - खाते हैं। अचिन्तयत् - सोचा, अकिंचित्करः - तुच्छ, विहाय - छोड़कर, गतः - चला गया। वर्ष द्वय + अभ्यन्तरे - दो वर्ष के भीतर, स्वसुः - बहन का। वैराग्यभावः - विरक्ति का भाव, परित्यज्य - छोड़कर। सङ्गतौ - संगति में, रममाणः - घूमते हुए, प्रज्ञाचक्षुषः - अन्धा, आर्ष ग्रन्थानाम् - वैदिक धर्म ग्रंथों का, प्रारभत - शुरू हुआ। मते - विचार में, दीक्षिताः - दीक्षित हो गए। अस्पृश्यतायाः - छूआ-छूत का, निवारणाय - दूर करने का, समाज+उद्धारकैः - समाज सुधारकों द्वारा, सह - साथ, सङ्कलनाय - संग्रह करने के लिए। विरच्य - रचना करके, चकार - किया, कार्य + अन्वयनाय - कार्यान्वन के लिए, दर्शयित्वा - दिखाकर, कृत्वा - करके, मूर्त्तरूपेण - मौलिक रूप से, सम्प्रति - इस समय, सर्वत्र - सभी जगह, अनन्तरं - इसके बाद, प्रशाखा - उपशाखा,

व्याकरण

1. समास विग्रहाः

कुत्सितरीतयः -	कुत्सिताश्च ताः रीतयः	कर्मधारय
अव्यापकता -	न व्यापकता	नञ् समास
धर्मान्तरणम् -	धर्मस्य अन्तरणम्	षष्ठी तत्पुरुष
धर्मोद्धारकाः -	धर्मस्य उद्धारकाः	षष्ठी तत्पुरुष
सत्यान्वेषिणः -	सत्यस्य अन्वेषिणः	" "
वैषम्यनिवारकाः -	वैषम्यस्य निवारकाः	" "
शिवोपासकः -	शिवस्य उपासकः	" "
रात्रिजागरणकालः -	रात्रौ जागरणं, तस्य कालः	" "

Officer

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निग्रहार्पितानि - निग्रहे अर्पितम्, तानि - सप्तमी तत्पुरुष
आकिञ्चित्करः - न किञ्चित् कर्तुं समर्थः - नञ् तत्पुरुष
मूर्तिपूजा - मूर्तेः पूजा षष्ठी तत्पुरुष
धर्माडम्बरः - धर्मस्य आडम्बरः " "
समाजदूषणानि - समाजस्य दूषणानि " "
शिक्षापद्धति - शिक्षायाः पद्धति " "
प्रज्ञाचक्षुषः - प्रज्ञाचक्षुः यस्य तस्य " "
जातिवादकृतम् - जातिवादेन कृतम् तृतीया "
संस्कृतशिक्षा - संस्कृतस्य शिक्षा षष्ठी "

2 प्रकृति-प्रत्यय विभाग व्युत्पत्ति :-
जातम् - जन् + क्त
आरुह्य - आ + रुह् + ल्यप्
दृष्टम् - दृश् + क्त
गतः - गम् + क्त
जाता - जन् + क्त + टाप्
समागतः - सम् + आ + गम् + क्त
परित्यज्य - परि + त्यज् + ल्यप्
अगमत् - गम् + लुङ्
चकार - कृ + लिट्
विरच्य - वि + रच् + ल्यप्
कृत्वा - कृ + क्त्वा
प्रारब्धः - प्र + आ + रभ् + क्त
स्मरणीयम् - स्मृ + अनीयर्
दर्शयित्वा - दृश् + णिच् + क्त्वा

अभ्यासः (मौखिकः)

1. स्वामिनः दयानन्दस्य द्वे वाक्ये वदत -
उत्तर - स्वामी दयानन्दः एकः समाजसुधारकः आसीत्। तस्य व्यक्तित्वं ग्रहणीयम्। सः आर्यसमाजस्य संस्थापकः आसीत्।

2. अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं वदत -
उत्तर - धर्मोद्धारकः - धर्मस्य उद्धारकः
सत्यान्वेषी - सत्यस्य अन्वेषिणः
वैषम्यनिवारकः - वैषम्यस्य निवारकः
शिखरस्थानीय - शिखरस्य स्थानीयः
संस्कृतशिक्षा - संस्कृतस्य शिक्षा

3. सन्धि-विच्छेदं कुरुत-
संकल्पाच्च - सङ्कल्पात् + च
धर्मान्तरम् - धर्म + अन्तरम्
समाजोद्धरणस्य - समाज + उद्धरणस्य
सत्यान्वेषिणः - सत्य + अन्वेषिणः
विग्रहार्पितानि - विग्रह + अर्पितानि
4. पञ्च अव्ययपदानि वदत -
उत्तर - यदा, कदा, तदा, तर्हि, नूनम्, सद्यः

अभ्यासः लिखितः

1 अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-
उत्तरम् - (क) मध्यकाले कुत्सितरीतयः भारतीयसमाजम् अदूषयन्
(ख) अनेके दलिताः हिन्दुसमाजं तिरस्कृत्य धर्मान्तरणं स्वीकृतवन्तः।
(ग) स्वामिनः दयानन्दस्य जन्म गुजरातप्रदेशस्य टंकारा-नामके ग्रामे अभवत्।
(घ) विग्रहार्पितानि द्रव्याणि मूषकाः भक्षयन्ति।
(ङ) रात्रिजागरणं विहाय मूलशङ्करः गृहं गतः।
2 निम्नलिखितानां पदानां सन्धि-विच्छेदं कुरुत-
उत्तरम्- स्वाध्ययनस्यास्य- स्व + अध्ययनस्य + अस्य
विग्रहमारुह्य - विग्रहम् + आरुह्य
वर्षेऽभूत् - वर्षे + अभूत्
स्वजीवनमसावर्पितवान् - स्वजीवनम् + असौ + अर्पितवान्
समाजोद्धारकैः - समाज + उद्धारकैः
विद्यालयानाञ्च - विद्यालयानाम् + च।
3. अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठात् समुचितं पदमादाय रिक्तस्थानानि पूरयत्।
उत्तरम् (क) समाजोद्धारकः (ख) मूलशङ्करः
(ग) मूषकाः (घ) गृहम् (ङ) आर्यसमाजस्य
4. अधोलिखितानां पदानां प्रकृति-प्रत्यय विभागं कुरुत-
दर्शयित्वा - दृश् + णिच् + क्त्वा
विरच्य - वि + रच् + ल्यप्
परित्यज्य - परि + त्यज् + ल्यप्
स्मरणीयम् - स्मृ + अनीयर्
दृष्टम् - दृश् + क्त
कृतम् - कृ + क्त
गतः - गम् + क्त

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

5. कोष्ठकेषु दत्तेषु धातुषु उचितप्रत्ययं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

उत्तर - (क) आसन् (ख) अभूत् (ग) कृतम्
(घ) स्मरणीयम् (ङ) समागताः

6. अधोलिखितानां पदानां संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत -

उत्तर - मूषकः - मूषकः बिले निवसति।
धर्मोद्धारकः - धर्मोद्धारकः सर्वत्र न दृश्यते।
परित्यज्य - सः आडम्बरं परित्यज्य गृहं प्रत्यागतवान्।
स्मरणीयम् - सद्विचारः सदा स्मरणीयम्।

7. निम्नलिखितानां पदानां विपरीतार्थकपदानि लिखत -

उत्तर - विद्वान् - मूर्खः
दोषः - गुणः
पराजितः - अपराजितः
अनास्था - आस्था
उपकारम् - अपकारम्
प्रारम्भः - अन्तः
गर्हितः - प्रशंसितः
वैषम्यम् - साम्यम्

8. अधोलिखितेषु पदेषु धातुमुक्तम् उचितं प्रत्ययं निर्दिशत -

(क) गतः - गम् + क्त
(ख) गत्वा - गम् + क्त्वा
(ग) गमनीयम् - गम् + अनीयर्
(घ) उपगम्य - उप + गम् + ल्यप्
(ङ) गन्तुम् - गम् + तुमुन्

9. अधोलिखितानि रेखाङ्कित पदानि बहुवचने परिवर्तयत -

उत्तर - (क) सः ग्रन्थानि विरच्य महान्तम् उपकारं अकरोत्।
(ख) सः प्राचीनशिक्षायां दोषान् अदर्शयत्।
(ग) सः गृहाणि अपश्यत्।
(घ) तत्र देवाः पूजिताः।
(ङ) सः खगान् पश्यति।

10. अधोलिखितं रेखाङ्कितपदमनुसृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

उत्तर - (क) मध्यकाले केषु कार्येषु आडम्बरः आसीत्?
(ख) तत्र विधवानां स्थितिः कीदृशी आसीत्?
(ग) कस्य नाम मूलशङ्करः आसीत्?
(घ) कः मेधावी आसीत्?
(ङ) कस्य शाखाः देशे विदेशेषु च वर्तन्ते?
(च) मूलशङ्करस्य कां प्रति अनास्था जाता?
(छ) किं परित्यज्य सः गतः?

Scanned with CamScanner